विद्या भवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

वर्ग दशम् विषय संस्कृत विषयशिक्षक श्यामउदय सिंह

ता: 27-04-2021 (एन.सी.ई.आर.टी. पर आधारित)

पाठ :द्वितीय: पाठनाम् बुद्धिर्बलवती सदा

- अस्ति देउलाख्यो ग्राम:।तत्र राजसिंह नाम राजपुत्र:। एकदा केनापि आवश्यककार्येण तस्य भार्या बुद्धिमती पुत्रद्वयोपेता पितुर्गृहं प्रति चलिता। मार्गे गहनकानने सा एकं व्याघ्रं ददर्श। सा व्याघ्रमागच्छन्तं दृष्ट्वा धार्ष्ट्यात् पुत्रौ चपेटया प्रहृत्य जगाद् –
- शब्दार्थ

  उपेता- साथ, सघनकाले -घने जंगल में

  ददर्श –देखा ,धार्ष्ट्यात् –ढिठाई से ,

  चपेटया –थप्पड़ से ,प्रहृत्य -मारकर, जगाद् -कहा
- अर्थ

  देउल नाम का गांव था। वहाँ राजसिंह नाम का राजपुत्र रहता था।एक बार किसी जरूरी काम से उसकी पत्नी बुद्धिमती दोनों पुत्रों के साथ पिता के घर की तरफ चली गई। रास्ते में घने जंगल में उसने एक बाघ को देखा।बाघ को आता हुआ देखकर उसने दोनों पुत्रों को एक एक थप्पड़ मार कर कहा।